वही प्यार की तलाश की यात्रा जारी......

इस कहानी की मुख्य पात्र है वृंदा...,एक छोटी लड़की जिसके मा-बाप उसकी छोटी उमर में ही गुज़र चुकी थी....। वह एक रिश्तेदार की घर पर रुकी थी, अपनी चार साल की उम्र में। लेकिन कुछ ही महीनों में वृंदा, उनकेलिए एक बोझ बन चुकी थी.... और उन सभी ने उसे एक अनाथालय छोड़ दी थी....। इसी वजह से ~~बह~~ ही वह अपने ~~छोटे~~ से बालपन को जी नहीं पायी थी....। ~~इसी~~ वह हर वक्त खामोश रहती थी--- इसी कारण से उसकी हरेक दोस्त उसका मज़ाक उड़ाता था... हम उन्हें दोस्त नहीं कह सके, अनाथालय के अन्य बच्चों...। वह हर वक्त अकेलापन महसूस करती थी.... वहाँ एक दूसरा पात्र 'गौरी माँ' एक महिला करीबन तीस साल की होगी... अब तक शादि नहीं की... और वहाँ की साफ सफाई करती थी--- लेकिन वृंदा को बात की पता नहीं की उसी गौरी माँ ने उसे एक नाम दी थी। रिश्तेदारों में किसी ने भी उसे एक नाम नहीं दी थी...।

यहीं कहानी शुरु होती है.....।

एक दिन वृंदा अकेली एक पेड के नीचे बैठी थी...। गौरी माँ को वह बहुत पसंद थी....। इसलिए उन्होंने उसके पास चली..... वृंदा की कंधे पर हाथ रखकर पूछा, " क्या हुआ बेटी...? इतने उदास क्यों हो...?" वृंदा अचानक से ऊपर की तरफ देखा और उस हाथ को हटा दिया....। ~~उस~~ उसने ~~क~~ कुछ बोला तक नहीं....। गौरीमाँ ~~अर~~ उसे बुलवाने की कई कोशिश की.... लेकिन वह उठकर बिन बोले कुछ चली गई....।

वृंदा हमेशा ही खामोश रहती थी.... क्योंकि उसके जीवन से हरेक प्यार के निशान उसकी माँ-बाप गुज़र जाने से मिट गए थी...।

एक दिन ~~आ~~ ~~शैता~~ शैतान बच्चों की मजाक हद से पार हो गई थी..। वृंदा भागकर उसी पेड के नीचे आकर रोना शुरु कर दिया... तभी एक ठंडी सी हाथ उसके सिर पर.....! वह अचानक से उठकर अपनी आँसू पोछने लगी....। गौरी माँ पूछी... "क्या हुआ बेटी.... तुम रो क्यों रही हो...? ~~क~~ कुछ है तो मुझे

बता सकती हो...."। वृंदा बोल उठी... "आप कौन है..? मेरे बारे में आप क्यों जानना चाहती हैं...? मेरा अपना कोई नहीं है...और मुझे कोई दोस्त भी नहीं है...।" गौरी माँ बोल उठी.., "अच्छा ऐसी बात है क्या...? मैं तो कोई नहीं हूँ...यहाँ की नौकर हूँ...। लेकिन मैं यहाँ एक राज़ बताने केलिए आई थी....। पर चलो कोई बात नहीं, अगर तुम मुझसे बात नहीं करनी चाहती थी...।" गौरीमाँ वहाँ से उठते ही वृंदा "ज़रा रुकिए..." "आप क्या कहने आई थी?" "अच्छा तो तुम अब जानना है..., तो मैं बता ही देती हूँ.... वह राज़ यह है कि "मुझे तुम बहुत पसंद हो...और तुम मुझे अपनी बेटी ~~जैसी~~ जैसे ही हो...।" गौरी माँ बोली.. यह सुनकर वृंदा की आँखें आँसू से भर उठी और वह पूछी..." क्या सच में, मैं आपको बहुत पसंद हूँ?" हाँ सच तुम मेरी बेटी जैसे नहीं बल्कि बेटी ही हो..। उस पेड़ के नीचे से उनका वह निर्मल और शुद्ध प्यार की कथा शुरु हुई...एक माँ और बेटी की...। उस दिन के बाद से उनका रिश्ता और एक दूसरे से

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 952 Participant Code: 302

जो प्यार है, " वह गहरा होने लगा... वह एक दूसरे से अपनी सारी दुख और खुशी बाँटने लगे...। ऐसे दस साल बीत गए... वृंदा पन्द्रह साल की हो गई...। ऐसे ही एक शांति भरे दिन... एक कार जो उस शांति को तोड़कर उस ~~अनाथाश्रम~~ अनाथालय के बाहर आकर रुक गई...। कुछ ही देर बाद दो अमीर लोग वृंदा आकर देखा... और उससे कई देर बात की...। और वह लौट गए...। उनके लौटने के बाद... गौरी जी को वहाँ के अधिकारियों ने बुलाया .... और कहा... "उस वृंदा नामक लड़की की चीजें पैक कर दो...."। हैरान होकर गौरी माँ पूछी, "पर क्यों...?" "तुमसे सवाल पूछने केलिए किसी ने भी नहीं कहा.... जो काम बताया गया है..., वह पूरा करो....।" गौरी माँ, "हाँ लेकिन सर जी...।" "तुम्हें समझ भी नहीं आ रही क्या...? उसे यहाँ से ले ~~जा~~ जा रहे हैं... मतलब वह अपना नई घर जा रही है...।" एक बिजली की तरह वह खबर उनके दिल पर गिर गए...। तड़पती आवाज़ से.... "क्या... क्या...?", गौरीमाँ।

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

"सर जी क्या आप वृंदा के बदले किसी और को उनके साथ भेज सकते है....? मैं आपके पैर पड़ती हूँ... कृपा करके उसे मत भेजियेगा...।" एक अधिकारी ने कहा..." क्या तुम पागल हो? जो ऐसे बोल रहे हो? क्या रिश्ता है तुम्हारे और उस लड़की के बीच"? गौरी जी..." कुछ नहीं बस प्यार का रिश्ता है....।" अधिकारी : "ये तुम क्या बेकार की चीज़ बोलते जा रहे हो...? प्यार व्यार....! निकालो इसे बाहर...।" सभी ने मिलकर उनको बाहर निकाल दिया...।

बाहर आते ही.... वृंदा दूर से भागकर आई और गौरी जी को पकड़कर ज़ोर से रोने लगी...। "गौरी माँ क्या ये सच है कि मुझे यहाँ से ले जा रहे है...?" गौरीजी कुछ बोल नहीं सका... और एक पत्थर की बनी शिला की तरह खड़ी रही...। मोटे-मोटे आँसू टपकते हुए वृंदा बोलने लगी...। गौरीमाँ मैं आपके बिना नहीं रह सकूँगी...। मुझे ले जाने मत दीजिए...। वही समय, वह लोग आ चुके थे वृंदा को लेने के लिए ... उन्हें देखकर... उसका रोना और

ज़ोर से होने लगी... "गौरी माँ..... गौरी माँ.. वो लोग आगए.. कोई थेना.... माँ... कोई थेना कि आप मुझे जाने नहीं देंगे....। अधिकारी लोगों ने उसे बल से हाथ पकड़कर ले जाने की कोशिश की....। वृंदा कहा.... "हाथ छोड़ो मेरा....!!! मैं अपनी माँ के साथ ही रहूँगा...।" यह सब देखकर बिना कोई भावना से खामोश रुखी गौरीमाँ...। आखिर उन लोगों ने बल से वृंदा को कार में बिठाती है...। ज़ोर से ज़ोर से रोकर अपना हाथ और सिर बाहर निकालकर वह गौरीमाँ से माँगती है कि, उसे जाने मत दो। कार चल उठी...और उस अनाथालय के बाहर चलते हो.... गौरी माँ... अपनी सुध-बुध खोती है.. और सब से गुस्सा होती है...और एक लकड़ी लेकर सबको मारने की कोशिश करती... यही सब देखकर उन सभी ने मिलकर गौरीजी को बाहर निकाल देते हैं.... बाहर निकलकर रास्ता के बीचों बीच से एक पागल की तरह अपनी मानसिक संतुलन खोकर इधर-उधर भटकती है...।

उसी समय, वृंदा अपना नई घर पहुँची... एक महल जैसी घर... उसको नई माँ-बाप ने उससे बहुत अच्छे से पेश आएँ... और उसे किसी चीज़ की कमी लगने नहीं दी... वृंदा पहले कि तरफ़ फिरसे खामोश होना होने लगी... वह उस बड़े घर की किसी कोने में हमेशा मौन होकर बैठती थी "अपनी गौरीमाँ को याद में" उसे अपनी ज़िंदगी में... किसी से भी इतना प्यार नहीं मिला, जितना उसे गौरीजी ने दी थी...। उस घर में वृंदा ~~अपना~~ नई माँ-बाप के इच्छा से अपनी ज़िंदगी गुज़र रही थी...। उनके इच्छा की कॉलेज, सब उनकी इच्छा से... उसकी ख्वाहिश किसी ने नहीं पूछा.. वह उससे बहुत ~~कम~~ प्यार कर थी... लेकिन उसे वह घर कभी भी अपना नहीं लगा... इन सबके बीच में भी.., वृंदा ने अपने गौरीजी को नहीं भूली...!

वह एक दिन गौरीजी की तलाश में यात्रा शुरु की.... अब तक सालों बीत गई... और वृंदा बीस साल की हो गई...। यानी वह अपनी गौरीमाँ

की प्यार की तलाश में यात्रा शुरु की..... ~~वह~~ उसने ~~उसने~~ वह पुराना वाला अनाथालय में जाकर तलाश की, लेकिन उसे पता चला कि वह, वहाँ से गए हुए कई सालों हो गई... उस दिन पूरे शहर में वृंदा ने तलाश की....। अपनी गरिमा की... लेकिन उसे वह नहीं मिला...। लेकिन वह अपनी तलाश रोकी नहीं.... वह ~~के~~ यात्रा जारी रही...। हरेक वृद्ध सदन रास्ते, और छोटा-मोटे दुकानों में भी तलाश की... पर नहीं...। वह अपने आप से बोलने लगी...। क्या भगवान, इतना ढूँढने के बावजूद भी उनसे मैं मिल नहीं सका...। वहाँ पास एक मंदिर दिखा वृंदा को, और वह प्रार्थना करने केलिए वहाँ गई...? प्रार्थना करते वक्त मन में...., "श्रीकृष्ण आप इतनी परीक्षा क्यों ले रहे हो मेरा..... क्या यह सच है कि भगवान होता है..., या झूठ..., अब तो मुझे संदेह होने लगा.....। तभी एक वृद्धा ~~फूल~~ तुलसी की माला बनाती हुए पूछती है...। क्या हुआ बेटी,.... कई देर से प्रार्थना कर रहे हो भगवान से...

कोई दुख है क्या....? अगर तुम चाहे तो इस माला
~~अगर~~ देकर उन्हें प्रसन्न कर सकते हो... कौन
जाने वह दुख ही मिट गया तो..., थोड़ा तो नड़खड़
है... ऐसे नहीं मानेगा... थोड़ा मनाना पड़ेगा...।
वृंदा, "हाँ माँ दीजिए एक माला, देखते हैं... कि मानेगा नहीं कैसे?
माला देते समय, उस वृद्धा अपनी चेहरा ऊपर की
और देखी तो....। "अरे.... गौरिमाँ... आप...?
वृंदा बोला....? मैं आपको ही तो तलाश में तो
इतनी साल...।" गौरिमाँ आश्चर्य चकित होकर
वृंदा को देखी है...। कुछ समय के लिए खामोश
होता है... "कहीं आप मुझे भूल तो नहीं गए...?"
वृंदा खुशी के आँसू भरे आँखों से पूछी...।
माँ बोलती..."बेटी... मेरी बेटी.... वृंदा.... तुम्हारे
तलाश में, मैंने कहाँ-कहाँ नहीं गया! तुम कहाँ
थे... इतने साल....?" दोनों आँसू से टूट पड़ता
है और एक दूसरे से अपना सुख-दुख बाँटने लगते...।
वृंदा कहती; मैं आपको कहीं नहीं जाने दूँगी... अब
से आप मेरे साथ रहेंगी.... माँ-बाप को मैं मना लूँगी...।

63rd Kerala School Kalolsavam - Jan 04 To 08, 2025 - Thiruvananthapuram

Item Code: 952 Participant Code: 302

गौरीमाँ, " बेटा... लेकिन, मैं कैसे ...?" आप कुछ नहीं बोलोगी..., जो मैं कहता वो सुनोगी.... एक दूसरे के आलिंगन करते हुए कई देर रखते हैं...। गौरीमाँ बोली..., "चलो बस करो... पहले अपना वादा पूरा करो.." "कैसा वादा?" वृंदा...। "अरे अपने कान्हा को हार चढ़ाओ.... वरना वो फिर से नाराज़ होगा...।" गौरीमाँ। वृंदा, "हाँ ठीक ठीक... आप भी आइये... मेरे साथ...." दोनों तुलसी हार चढ़ाते हैं....

~~~~ तभी एक ठंडी हवा आई.... और उस हवा से, मंदिर की घंटी बजने लगी....।

उस ठंडी ~~~~ हवा ने दुख और पीड़ा को उनके जीवन से मिटा दिया.... और दोनों हाथ पकड़कर अपनी यात्रा शुरू की.... और वह यात्रा हमेशा जारी रहेगी....।

नैतिक शिक्षा :- हम सबका जीवन यात्रों से भरी है...,

~~अगर~~ आपको संयम और सच्चाई के साथ अपनी यात्रा जारी रखनी चाहिए....। आधे रास्ते पर कभी छोड़ना नहीं। अगर आपका उद्देश्य शुद्ध है तो, जारी प्रकृति आपके साथ होगी।

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)
~~~~